शिक्षा के व्यवसायीकरण के मुद्दे एवं चिन्तायें

हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली बालकों का सर्वांगीण विकास करने में असफल रही है। इसलिए शिक्षा के व्यवसायीकरण की माग की जाती रही है।

शिक्षा के व्यवसायीकरण के लिए सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रमों में व्यवसायिक ज्ञान कौशल एवं तकनीकों को सम्मिलित करना होगा।

(i) माध्यमिक शिक्षा आयोग के पूर्व वुड डिस्पैच, सार्जेन्ट योजना में भी व्यवसायिक पाठ्यक्रम शुरू करने की बात कही थी।

(ii) NPE 1968, 1986 के सुझाव पर केन्द्रीय सरकार ने 1988 में +2 स्तर पर माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के व्यवसायीकरण की योजना शुरू की। इसके निर्देशन में 'संयुक्त व्यावसायिक शिक्षा परिषद' का गठन हुआ।

माध्यमिक शिक्षा के व्यवसायीकरण में बाधायें

(i) संसाधनों का अभाव।
(ii) छात्रों में रुचि न होना।
(iii) प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव।
(iv) सैद्धान्तिक पक्ष को ज्यादा महत्व देना।
(v) प्रयोगशालाओं की उचित व्यवस्था न होना।

Scanned with CamScanner

शैक्षिक अवसरों की समानता से सम्बन्धित मुद्दे —:

शैक्षिक अवसरों की समानता से सम्बन्धित प्रमुख कारण निम्न हैं।

(A) लैंगिक भेदभाव —
(B) विद्यालयों की दूरी एवं अनुपलब्धता —
(C) आर्थिक समस्याएं —
(D) प्रादेशिक समस्याएं —
(E) घर का दूषित वातावरण —
(F) मानसिक असन्तुलन / शारीरिक दिव्यांगता —

रणनीतियाँ —:

शैक्षिक अवसरों में समानता लाने के लिए निम्न सुझाव दिये जा सकते हैं।

(i) योग्यता के आधार पर विद्यार्थियों का चयन।
(ii) समान्य विद्यालय प्रणाली।
(iii) प्रौढ़ शिक्षा का प्रावधान।
(iv) संवैधानिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रयास।

शैक्षिक अवसरों की समानता लाने में बाधक तत्वों को दूर कर एक उत्कृष्ट शैक्षिक वातावरण बनाया जा सकता है। चाहे असमानताओं का कारण वातावरण हो या वंशानुक्रम।

Scanned with CamScanner

प्रजातन्त्र (Democracy)

जनतन्त्र का अर्थ हुआ 'जनता का शासन'। अधिकतर 'जनतंत्र' शब्द का प्रयोग राजनैतिक अर्थ में शासन-व्यवस्था के रूप में किया जाता है।

परिभाषा -

सीले के अनुसार— "जनतंत्र वह सरकार है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति भाग लेता है।

प्रजातन्त्र के मूल सिद्धान्त :—
(Basic Principles of Democracy)

(A) समानता (Equality) —
(B) न्याय (Justice) —
(C) स्वतन्त्रता (Freedom) —
(D) भ्रातृत्व (Brotherhood) —

धर्म निरपेक्षता (Secularism)

भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है। यहाँ धर्म के आधार पर किसी के साथ भेदभाव नहीं किया जाता है। धर्म निरपेक्षता का मूल मंत्र है— "अनेकता में एकता" जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में अपनाना चाहिए और बिना किसी के धर्म की आलोचना करते हुए अपने धर्म का पालन करे।

Scanned with CamScanner